

UP Board Class 12 Genral Hindi Question Paper 2024 (Code 302 DI) with Solutions

Time Allowed :3 hours 15 minutes | Maximum Marks :100 | Total Questions :14

**सामान्य निर्देश**

1. प्रारंभ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।
2. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं। दोनों खंडों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

**(खंड क)**

1(क). आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी गद्य की प्रथम पुस्तक माना है :

- (i) 'नासिकेतोपाख्यान' को
- (ii) 'चंद्र चंपू बसन्त की महिमा' को
- (iii) 'भाषा योगावाशिष्ठ' को
- (iv) 'सुखसागर' को

**Correct Answer :** (iii) 'भाषा योगावाशिष्ठ' को

**Solution :** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'भाषा योगावाशिष्ठ' को हिन्दी गद्य की प्रथम पुस्तक माना है। यह संस्कृत ग्रंथ 'योगवाशिष्ठ' का हिंदी अनुवाद है।

**Quick Tip**

हिन्दी गद्य की प्रारंभिक पुस्तकों में 'भाषा योगावाशिष्ठ' को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

1(ख). गुलाबराय की रचना 'भरी असफलताएँ' की विधा है :

- (i) उपन्यास
- (ii) नाटक
- (iii) निबंध
- (iv) कहानी

**Correct Answer :** (iii) निबंध

**Solution :** गुलाबराय की रचना 'भरी असफलताएँ' निबंध विधा में लिखी गई है। यह समाज की विभिन्न परिस्थितियों पर केंद्रित व्यंग्यात्मक शैली में लिखित निबंधों का संग्रह है।

**Quick Tip**

हिन्दी साहित्य में 'भरी असफलताएँ' को प्रमुख निबंध संग्रहों में गिना जाता है।

---

1(ग). 'ब्राह्मण' पत्रिका के संपादक हैं :

- (i) बालकृष्ण भट्ट
- (ii) धर्मवीर भारती
- (iii) काशीश्वर
- (iv) प्रताप नारायण मिश्र

**Correct Answer :** (i) बालकृष्ण भट्ट

**Solution :** 'ब्राह्मण' पत्रिका के संपादक बालकृष्ण भट्ट थे। यह पत्रिका समाज सुधार और राष्ट्रीयता से संबंधित विषयों पर आधारित थी।

Quick Tip

बालकृष्ण भट्ट ने 'ब्राह्मण' पत्रिका के माध्यम से समाज सुधार और देशभक्ति को बढ़ावा दिया।

---

1(घ). हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास है :

- (i) 'त्यागपत्र'
- (ii) 'ग्राम्यगंधा'
- (iii) 'पुनर्नवा'
- (iv) 'पट की खोज'

**Correct Answer :** (iii) 'पुनर्नवा'

**Solution :** हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास 'पुनर्नवा' है, जो भारतीय संस्कृति, परंपरा और समाज के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है।

Quick Tip

हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण आलोचक और उपन्यासकार थे।

---

1(ङ). कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की रचना है :

- (i) 'विचार-प्रवाह'
- (ii) 'भाटी हो गई सोना'
- (iii) 'परछाई'
- (iv) 'साहित्य और समाज'

**Correct Answer :** (ii) 'भाटी हो गई सोना'

**Solution :** कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की प्रसिद्ध रचना 'भाटी हो गई सोना' है, जिसमें उन्होंने ग्रामीण जीवन, संघर्ष और भारतीय संस्कृति का चित्रण किया है।

Quick Tip

'भाटी हो गई सोना' ग्रामीण परिवेश और भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को दर्शाने वाली महत्वपूर्ण कृति है।

---

2(a). भारतेन्दुयुगीन कवि हैं :

- (i) 'प्रेमचंद'
- (ii) 'महादेवी वर्मा'
- (iii) 'भवानी प्रसाद मिश्र'
- (iv) 'नरेन्द्र शर्मा'

**Correct Answer :** (iii) 'भवानी प्रसाद मिश्र'

**Solution :** भवानी प्रसाद मिश्र भारतेन्दुयुगीन कवि नहीं थे । भारतेन्दु हरिश्चंद्र इस काल के प्रमुख कवि थे ।

Quick Tip

भारतेन्दु युग हिंदी साहित्य के पुनर्जागरण का युग माना जाता है ।

---

2(b). 'हुंकार' काव्य के रचयिता हैं :

- (i) 'सुमित्रानन्दन पंत'
- (ii) 'सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
- (iii) 'रामधारी सिंह 'दिनकर'
- (iv) 'मुक्तिबोध'

**Correct Answer :** (iii) 'रामधारी सिंह 'दिनकर''

**Solution :** 'हुंकार' काव्य रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित है । यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लिखा गया एक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह है ।

Quick Tip

'हुंकार' राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत एक प्रसिद्ध काव्य रचना है ।

---

2(c). प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं :

- (i) 'केदारनाथ अग्रवाल'
- (ii) 'त्रिलोचन'
- (iii) 'नागार्जुन'
- (iv) 'रामेश्वर बहादुर सिंह'

**Correct Answer :** (ii) 'त्रिलोचन'

**Solution :** प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रमुख कवि त्रिलोचन थे । वे प्रयोगवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं और उनकी कविताएँ नवीन प्रयोगों से भरपूर होती थीं ।

Quick Tip

प्रयोगवाद हिंदी कविता में नवीन प्रयोगों की प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है ।

2(d). 'तीसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष है :

- (i) 1959
- (ii) 1969
- (iii) 1951
- (iv) 1941

**Correct Answer :** (iii) 1951

**Solution :** 'तीसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष 1951 है । यह हिंदी काव्य के प्रयोगवादी कवियों का एक संग्रह है ।

Quick Tip

'तीसरा सप्तक' में हिंदी काव्य में प्रयोगवादी प्रवृत्तियों को स्थान मिला ।

2(e). 'पल्लव' से उद्धृत कविता 'परिवर्तन' के रचयिता हैं :

- (i) 'महादेवी वर्मा'
- (ii) 'सुमित्रानन्दन पंत'
- (iii) 'सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला''
- (iv) 'जयशंकर प्रसाद'

**Correct Answer :** (ii) 'सुमित्रानन्दन पंत'

**Solution :** 'पल्लव' में संकलित 'परिवर्तन' कविता सुमित्रानन्दन पंत द्वारा रचित है । यह छायावादी काव्य शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है ।

Quick Tip

'पल्लव' सुमित्रानन्दन पंत की प्रसिद्ध काव्य कृति है, जिसमें उनकी छायावादी शैली स्पष्ट रूप से झलकती है ।

3. दिए गए गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपेक्षित था । सुतरीयों के आंसिज्जनकनी सुस्पष्ट चरणों के मुख आधार से वह फूलता था, कोमल कणों पर कर्णावतंस के रूप में झूलता था और चंचल नील अलकों की अंजलि शोकों को सौ गुना बढ़ा देती थी । वह महाशोक के मन में मोह पैदा करता था, मर्यादा पुरुषोत्तम के चिन्त में सीता का भ्रम पैदा करता था और मनोज्ञान देवता के एक इशारे पर कन्ये पर से ही झूट उठता था ।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

**Solution :** उक्त गद्यांश अशोक के सम्मान और उसके महत्व को दर्शाता है । इसमें कालिदास के शब्दों के माध्यम से अशोक की विशेषताओं को उकेरा गया है ।

Quick Tip

सन्दर्भ लिखते समय लेखक और संदर्भित घटना का उल्लेख अवश्य करें ।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

**Solution :** रेखांकित अंश में अशोक के सौंदर्य और उसकी विशेषताओं का उल्लेख किया गया है । यह बताया गया है कि वह कोमल और आकर्षक था, किंतु शोक की अनुभूति को भी बढ़ा देता था ।

Quick Tip

व्याख्या लिखते समय मूल अर्थ को बनाए रखते हुए उसे सरल शब्दों में प्रस्तुत करें ।

(ग) संस्कृत के किस कवि ने अशोक को सम्मानित किया है ?

**Solution :** संस्कृत के प्रसिद्ध कवि कालिदास ने अशोक को सम्मानित किया था । उन्होंने अपनी रचनाओं में अशोक के सौंदर्य और महत्व को विशेष रूप से वर्णित किया है ।

Quick Tip

संस्कृत साहित्य में अशोक का विशेष स्थान है, इसे रचनाओं में प्रमुखता दी गई है ।

(घ) अशोक पर फूल आने के समय में लेखक के क्या विचार हैं ?

**Solution :** लेखक के अनुसार, अशोक के फूलने का समय विशेष रूप से महत्व रखता है । यह सौंदर्य, कोमलता और भावनात्मक संवेदनशीलता का प्रतीक है । यह समय मानवीय भावनाओं को जागृत करता है ।

Quick Tip

प्रश्न के उत्तर में लेखक की भावनाओं और विचारों को समावेशित करें ।

(ङ) आंसिज्जनकनी तथा कर्णावतंस के अर्थ लिखिए ।

**Solution :** - आंसिज्जनकनी : अश्रु प्रवाह उत्पन्न करने वाली वस्तु ।

- कर्णावतंस : कान में पहना जाने वाला आभूषण ।

Quick Tip

शब्दों के सही अर्थ को उनके संदर्भ के अनुसार परिभाषित करें ।

## अथवा

दिए गए गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है। बड़ा लम्बा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूँजी से। कई लोगों की प्रतिष्ठा ही दूसरों की कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है। बड़े रस-विभोर होकर वे जिस-सतिस की सत्य-कलित कलंक-कथा सुनाते हैं और स्वयं को पूर्ण संत समझने-समझाने की बुद्धि का अनुभव करते हैं।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक और पाठ का नाम लिखिए।

**Solution :** उक्त गद्यांश के लेखक (लेखक का नाम भरें) हैं और यह पाठ (पाठ का नाम भरें) से लिया गया है।

### Quick Tip

प्रश्न में दिए गए अंश को पाठ्यपुस्तक से मिलाकर लेखक और पाठ का सही नाम लिखें।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

**Solution :** इस अंश में बताया गया है कि कुछ लोग निन्दा को अपनी पूँजी बना लेते हैं और इसे फैलाकर अपनी प्रतिष्ठा बनाते हैं। यह उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है।

### Quick Tip

व्याख्या करते समय मुख्य विचार को ध्यान में रखते हुए विस्तारपूर्वक लिखें।

(ग) निन्दा किसकी पूँजी होती है ?

**Solution :** जो लोग दूसरों की आलोचना और अपमान करके स्वयं को श्रेष्ठ समझते हैं, उनके लिए निन्दा ही पूँजी होती है। वे दूसरों की गलतियाँ निकालकर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

### Quick Tip

निन्दा का तात्पर्य और उसका प्रभाव स्पष्ट करें।

(घ) 'सत्य-कलित, कलंक-कथा' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

**Solution :** 'सत्य-कलित' का अर्थ है सत्य से युक्त और 'कलंक-कथा' का अर्थ है किसी व्यक्ति की बदनामी की कहानी। यह बताता है कि कुछ लोग दूसरों की प्रतिष्ठा को गिराने के लिए सत्य का उपयोग भी करते हैं।

### Quick Tip

शब्दों के अर्थ स्पष्ट करते समय उनका संदर्भ भी अवश्य दें।

(ड) कुछ लोगों की प्रतिष्ठा का आधार क्या होता है ?

**Solution :** कुछ लोगों की प्रतिष्ठा दूसरों की आलोचना और निन्दा करने पर आधारित होती है। वे दूसरों की त्रुटियों को उजागर करके अपने आपको श्रेष्ठ साबित करने का प्रयास करते हैं।

Quick Tip

प्रतिष्ठा के सही मायने और उसके आधार को विस्तार से समझाएं।

4. दिए गए पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मेरे प्यारे नव जलद से कंज से नैन वाले  
जोके आये न मधुवन से ओ न भेजा संदेशा ।  
मैं रो-रो के प्रिय-विरह से बावली हो रही हूँ ।  
जोके मेरे सब दुख-कथा श्याम को तू सुना दे ॥

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश प्रसिद्ध भक्तिकालीन कवि सूरदास द्वारा रचित है। इस काव्यांश में गोपियों की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण किया गया है। वे श्रीकृष्ण से मिलन के लिए व्याकुल हैं।

Quick Tip

संदर्भ लिखते समय रचना, कवि और प्रमुख भावों का उल्लेख अवश्य करें।

(ख) पवन-दूतिका द्वारा किसने किसको संदेश भेजा है ?

उत्तर : इस पद्यांश में गोपियाँ पवन को अपना दूत मानकर श्रीकृष्ण को संदेश भेज रही हैं। वे अपने प्रिय श्रीकृष्ण के विरह में दुखी हैं और उनसे पुनर्मिलन की इच्छा व्यक्त कर रही हैं।

Quick Tip

पवन-दूतिका का उल्लेख भक्तिकालीन साहित्य में प्रायः गोपियों की विरह वेदना दर्शाने हेतु किया जाता है।

(ग) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : रेखांकित अंश में गोपियाँ अपने प्रिय श्रीकृष्ण के संदेश की प्रतीक्षा कर रही हैं। वे अत्यंत दुखी होकर यह प्रकट कर रही हैं कि श्रीकृष्ण की ओर से कोई समाचार नहीं आया, जिससे उनकी विरह वेदना और बढ़ गई है।

Quick Tip

रेखांकित अंश की व्याख्या करते समय शब्दों के भावार्थ और संदर्भ को स्पष्ट करें।

(घ) प्रस्तुत पद्यांश में श्रीकृष्ण के सौंदर्य का वर्णन किस प्रकार किया है ?

उत्तर : इस पद्यांश में श्रीकृष्ण के सौंदर्य को 'नव जलद' (नवीन काले मेघ) के समान बताया गया है, जिससे उनका सुंदर, मनमोहक स्वरूप स्पष्ट होता है। साथ ही, उनके नेत्रों की उपमा 'कंज' (कमल) से दी गई है, जो उनकी अपार सुंदरता को दर्शाती है।

Quick Tip

सौंदर्य वर्णन में प्रयुक्त अलंकार और उपमानों पर विशेष ध्यान दें।

(ङ) प्रस्तुत पद्यांश में मुख्य रस तथा उसका स्थायी भाव लिखिए।

उत्तर : इस पद्यांश में शृंगार रस की प्रधानता है, जिसमें विप्रलंब शृंगार (विरह भाव) प्रमुख रूप से व्यक्त किया गया है। इस रस का स्थायी भाव रति है, जो प्रेम की गहनता को दर्शाता है।

Quick Tip

रस पहचानते समय स्थायी भाव और संदर्भित भावनाओं का विश्लेषण करें।

अथवा

मैं नीर भरी दुःख की बदली ।  
स्पंदन में चिर निश्चय बसा,  
करंदन में आहट विषम हँसी,  
नयनों में दीपक से जलते  
पलकों में निर्झरी मचली !

(क) उपर्युक्त पद्यांश का शोधक एवं रचना का नाम लिखिए।

Solution : उक्त पद्यांश की रचनाकार महादेवी वर्मा हैं। यह रचना उनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह "नीरजा" से ली गई है।

Quick Tip

काव्यांश के लेखक और कृति का नाम याद रखना आवश्यक है।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Solution : इस पद्यांश में कवयित्री ने अपने हृदय की पीड़ा को व्यक्त किया है। 'नीर भरी दुःख की बदली' के माध्यम से उन्होंने अपने हृदय में छिपे गहरे दुःख को दर्शाया है। 'स्पंदन में चिर निश्चय बसा' पंक्ति से यह स्पष्ट होता है कि कवयित्री का हृदय सदैव करुणा और पीड़ा से भरा हुआ है।

Quick Tip

काव्य व्याख्या लिखते समय मूल अर्थ को ध्यान में रखें और सरल शब्दों में प्रस्तुत करें।

(ग) 'नयनों में दीपक से जलते' में कौन-सा अलंकार प्रस्तुत हुआ है ? स्पष्ट कीजिए।

**Solution :** 'नयनों में दीपक से जलते' में उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है। इसमें कवयित्री ने अपने नेत्रों को दीपक की ज्योति के समान जलता हुआ बताया है, जिससे उनकी वेदना और करुणा स्पष्ट होती है।

Quick Tip

अलंकार की पहचान करते समय उपमेय और उपमान का ध्यान रखें।

(घ) कवयित्री के निःसंग रहने का क्या कारण है ?

**Solution :** कवयित्री का निःसंग रहने का कारण उनका गहरा आत्मिक दुःख है। वे अपने जीवन को पीड़ा और करुणा से भरा हुआ मानती हैं और इसलिए स्वयं को संसार से अलग-थलग अनुभव करती हैं।

Quick Tip

कवयित्री के मनोभावों को समझते हुए उत्तर दें।

(ङ) उपर्युक्त पद्यांश में कवयित्री ने स्वयं को क्या बताया है ?

**Solution :** इस पद्यांश में कवयित्री ने स्वयं को "नीर भरी दुःख की बदली" बताया है। यह रूपक अलंकार का सुंदर उदाहरण है, जहाँ उन्होंने स्वयं को दुःख से भरी एक बदली के रूप में प्रस्तुत किया है जो जीवन में केवल पीड़ा और करुणा को दर्शाती है।

Quick Tip

कविता के प्रतीकात्मक अर्थ को समझकर उत्तर दें।

5. निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए : (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)

(क) लेखकों की सूची :

1. हरिशंकर परसाई
2. प्रो. जी. मुद्गल राठी

### 3. हजारी प्रसाद द्विवेदी

**Solution :** हरिशंकर परसाई हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार थे। उनके व्यंग्य समाज की विसंगतियों को उजागर करते हैं। उनकी भाषा सरल व प्रभावशाली है। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं : रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज, विकलांग श्रद्धा का दौर आदि।

#### Quick Tip

परिचय में लेखक की भाषा-शैली और कृतियों को संक्षिप्त रूप में लिखें।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए : (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)

कवियों की सूची :

1. मैथिलीशरण गुप्त
2. रामधारी सिंह 'दिनकर'
3. 'अज्ञेय'

**Solution :** रामधारी सिंह 'दिनकर' को हिंदी का राष्ट्रकवि कहा जाता है। उन्होंने वीर रस और राष्ट्रभक्ति से प्रेरित कविताएँ लिखीं। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं : "रश्मिर्थी", "उर्वशी", "कुरुक्षेत्र", "परशुराम की प्रतीक्षा" आदि। उनकी काव्यशैली ओजस्वी और प्रेरणादायक है।

#### Quick Tip

उत्तर में कवि के काव्य-शैली और प्रसिद्ध रचनाओं का उल्लेख करें।

6. 'पज्वलाइट' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)

**Solution :** 'पज्वलाइट' कहानी समाज में व्याप्त नैतिक पतन, स्वार्थ और मानवता के ह्रास को दर्शाती है। इसमें यह दिखाया गया है कि कैसे लालच और अमानवीयता मानवीय मूल्यों को समाप्त कर देती है। यह कहानी पाठकों को नैतिकता और सामाजिक मूल्यों को बनाए रखने की प्रेरणा देती है।

#### Quick Tip

उत्तर में कहानी का मूल उद्देश्य और उसकी नैतिक शिक्षा का उल्लेख करें।

अथवा

‘बहादुर’ कहानी की कथावस्तु का सार लिखिए । (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)

**Solution :** ‘बहादुर’ कहानी एक ऐसे पात्र की संघर्षमयी यात्रा को दर्शाती है जो कठिनाइयों के बावजूद अपने आदर्शों से नहीं डिगता । कहानी में बहादुरी, निष्ठा और संघर्ष की भावना को विशेष रूप से दर्शाया गया है । यह पाठकों को आत्मनिर्भरता और साहस का संदेश देती है ।

Quick Tip

उत्तर में कहानी की मूल भावनाओं और उद्देश्य को संक्षेप में प्रस्तुत करें ।

7. स्वपठित खंडकाव्य के आधार पर किसी एक खंड के एक प्रश्न का उत्तर दीजिए : (अधिकतम शब्द-सीमा : 80 शब्द)

(क) (i) ‘त्यागपथी’ खंडकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

**Solution :** ‘त्यागपथी’ खंडकाव्य त्याग, बलिदान और कर्तव्यनिष्ठा पर आधारित है । यह नायक के संघर्षों और आदर्शों की कहानी प्रस्तुत करता है, जिसमें वह समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को सर्वोपरि मानता है । यह पाठकों को निस्वार्थ सेवा और सच्चे आदर्शों की प्रेरणा देता है ।

Quick Tip

खंडकाव्य की कथावस्तु को संक्षेप में लेकिन प्रभावी रूप में प्रस्तुत करें ।

(क) (ii) ‘त्यागपथी’ खंडकाव्य के आधार पर ‘हर्षवर्धन’ का चरित्रांकन कीजिए ।

**Solution :** ‘हर्षवर्धन’ एक आदर्श नायक है, जिसमें त्याग, परोपकार और सहृदयता जैसे गुण हैं । वह समाज की भलाई के लिए अपने व्यक्तिगत सुखों का त्याग करता है । उसकी संघर्षशील प्रवृत्ति, कर्तव्यपरायणता और उच्च विचार उसे एक महान व्यक्तित्व बनाते हैं ।

Quick Tip

चरित्रांकन में नायक के गुणों, कर्तव्यों और विचारधारा का उल्लेख करें ।

(ख) (i) ‘पृथ्वीराज’ खंडकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

**Solution :** ‘पृथ्वीराज’ खंडकाव्य में पृथ्वीराज चौहान को एक वीर, स्वाभिमानी और संघर्षशील नायक के रूप में चित्रित किया गया है । वे सत्य और न्यायप्रिय राजा थे, जिनमें अदम्य साहस और कर्तव्यनिष्ठा थी । उनकी वीरता और रणकौशल अद्वितीय थे । उन्होंने अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए मुहम्मद गोरी से कई युद्ध लड़े । पृथ्वीराज का चरित्र आत्मसम्मान, कर्तव्यपरायणता और पराक्रम का प्रतीक है ।

Quick Tip

नायक की चारित्रिक विशेषताओं को प्रमुखता दें और उदाहरणों के साथ प्रस्तुत करें ।

---

(ii) 'पृथ्वीराज' खंडकाव्य की कथावस्तु लिखिए ।

**Solution :** 'पृथ्वीराज' खंडकाव्य में पृथ्वीराज चौहान के जीवन और संघर्ष की गाथा प्रस्तुत की गई है । इसमें पृथ्वीराज और मुहम्मद गोरी के बीच हुए युद्धों का वर्णन मिलता है । यह काव्य पृथ्वीराज के पराक्रम, वीरता और आत्मसम्मान को दर्शाता है । उनकी अंतिम विजय और पराजय का चित्रण इस खंडकाव्य में विशेष रूप से किया गया है ।

Quick Tip

कथावस्तु संक्षेप में लेकिन प्रभावी रूप में प्रस्तुत करें ।

---

(ग) (i) 'आलोकतंत्र' खंडकाव्य के छठे सर्ग (नमक सत्याग्रह) की कथा अपने शब्दों में लिखिए ।

**Solution :** 'आलोकतंत्र' खंडकाव्य का छठा सर्ग भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नमक सत्याग्रह पर आधारित है । इसमें महात्मा गांधी के नेतृत्व में अंग्रेजों के अन्यायपूर्ण कानूनों के विरुद्ध संघर्ष को दर्शाया गया है । यह खंड सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर अत्याचारों के विरुद्ध प्रतिरोध की प्रेरणा देता है ।

Quick Tip

सत्याग्रह की मूल भावना और प्रभाव को उत्तर में प्रमुखता दें ।

---

(ii) 'आलोकतंत्र' खंडकाव्य के आधार पर महात्मा गांधी का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

**Solution :** महात्मा गांधी को 'आलोकतंत्र' खंडकाव्य में सत्य, अहिंसा और आत्मबलिदान का प्रतीक माना गया है । वे दृढ़ संकल्पित नेता थे, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अहिंसा का मार्ग अपनाया । उनकी सहनशीलता, संघर्षशीलता और सामाजिक चेतना इस खंडकाव्य में स्पष्ट रूप से झलकती है ।

Quick Tip

चरित्र-चित्रण में महात्मा गांधी के गुणों और उनके प्रभाव को प्रमुखता दें ।

---

(घ) (i) 'श्रवणकुमार' खंडकाव्य के आधार पर दशरथ की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

**Solution :** दशरथ 'श्रवणकुमार' खंडकाव्य में एक संवेदनशील और न्यायप्रिय राजा के रूप में चित्रित किए गए हैं । वे अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित थे, किंतु एक भूल के कारण उन्होंने एक निर्दोष ब्राह्मण पुत्र की हत्या कर दी । उनके हृदय में पश्चाताप की भावना थी, जो उनकी करुणा और धर्मपरायणता को दर्शाती है ।

Quick Tip

दशरथ के नैतिक गुणों और उनकी मनोस्थिति को उत्तर में स्पष्ट करें।

(ii) 'श्रवणकुमार' खंडकाव्य के 'अयोध्या' सर्ग की कथावस्तु लिखिए।

**Solution :** 'अयोध्या' सर्ग में दशरथ द्वारा अनजाने में श्रवणकुमार की हत्या किए जाने की कथा है। जब श्रवणकुमार के माता-पिता को इसका पता चलता है, तो वे दशरथ को श्राप देते हैं कि वे भी पुत्र वियोग में प्राण त्यागेंगे। यह खंड करुणा, न्याय और कर्तव्यनिष्ठा का संदेश देता है।

Quick Tip

कथावस्तु को संक्षिप्त लेकिन प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करें।

(ड) (i) 'सत्य की जीत' खंडकाव्य के आधार पर 'दुशासन' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

**Solution :** 'सत्य की जीत' खंडकाव्य में दुशासन को अहंकारी, अधर्मी और अन्यायी व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। उसने द्रौपदी के चीरहरण में मुख्य भूमिका निभाई और अधर्म का समर्थन किया। अंततः वह अपने पापों के कारण महाभारत के युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

Quick Tip

चरित्र-चित्रण में दुशासन के गुणों और दोषों का संतुलित उल्लेख करें।

(ii) 'सत्य की जीत' खंडकाव्य का कथासार लिखिए।

**Solution :** 'सत्य की जीत' खंडकाव्य में सत्य, धर्म और न्याय की विजय को दर्शाया गया है। इसमें महाभारत के युद्ध का वर्णन है, जहाँ धर्म के मार्ग पर चलने वाले पांडव अंततः विजय प्राप्त करते हैं और अधर्म पराजित होता है। यह खंड नैतिकता और आदर्शों का संदेश देता है।

Quick Tip

कथासार लिखते समय मुख्य घटनाओं और संदेश को स्पष्ट करें।

(च) (i) 'परिश्रम' खंडकाव्य का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

**Solution :** 'परिश्रम' खंडकाव्य में यह संदेश दिया गया है कि सफलता के लिए कठिन परिश्रम और आत्मनिर्भरता आवश्यक है। इसमें एक नायक की कहानी है, जो संघर्ष और श्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। यह काव्य आत्मनिर्भरता और धैर्य की प्रेरणा देता है।

Quick Tip

उत्तर में परिश्रम के महत्व को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करें।

(ii) 'परिश्रम' खंडकाव्य के आधार पर 'कर्ण' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

**Solution :** 'परिश्रम' खंडकाव्य में कर्ण को एक महान योद्धा और दानी पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। उनका जीवन संघर्षमय रहा, फिर भी उन्होंने कभी सत्य और कर्तव्य का त्याग नहीं किया। उनकी महानता उनकी दानशीलता, वीरता और दृढ़ संकल्प में प्रकट होती है।

Quick Tip

कर्ण के आदर्शों और संघर्षों को उत्तर में विशेष रूप से शामिल करें।

(खंड ख)

8. (क) निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का संदर्भ-सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए।

संस्कृत गद्यांश :

संस्कृतस्य साहित्यं सरसं, व्याकरणञ्च सुनिश्चितम् । तस्य गद्ये पद्ये च लालित्यं, भावबोधसामर्थ्यम्, अद्वितीयं श्रुतिमाधुर्यञ्च वर्तते । किं बहुना चिरनिर्माणार्थं यादृशीं सत्प्रेरणां संस्कृतवाङ्मयं ददाति न तादृशीं किञ्चिदन्यत् । मूलभूतानां मानवीयगुणानां यादृशीं विवेचना संस्कृतसाहित्ये वर्तते, नान्यत्र तादृशी ।

**Solution : संदर्भ :** प्रस्तुत गद्यांश में संस्कृत भाषा के महत्व और उसकी विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

**अनुवाद :** संस्कृत साहित्य में रसों की अभिव्यक्ति अत्यंत प्रभावशाली होती है। इसकी भाषा व्याकरण के सुसंगठित नियमों से सुसज्जित है। संस्कृत के गद्य और पद्य में अद्भुत लालित्य, भावनाओं की गहन अभिव्यक्ति तथा मधुरता पाई जाती है। इसके माधुर्य और प्रभावशाली ध्वनि के कारण यह भाषा दिव्य अनुभूति प्रदान करती है।

Quick Tip

संस्कृत अनुवाद करते समय व्याकरणिक संरचना को बनाए रखें और सरल भाषा में अर्थ स्पष्ट करें।

अथवा

संस्कृत गद्यांश :

महामना विद्वान् वक्ता, धार्मिको नेता, पटुः पत्रकारश्चासीत् । परमस्य सर्वोच्चगुणः जनसेवैव आसीत् । यत्र कुत्रापि अयं जनान् दुःखितान् पीड्यमानांश्चापश्यत् तत्रैव सः शीघ्रमेव उपस्थितः । सर्वविधं साहाय्यञ्च अकरोत् । प्राणिसेवा अस्य स्वभाव एवासीत् ।

**Solution : संदर्भ :** प्रस्तुत गद्यांश में एक महान व्यक्ति के गुणों और उनकी समाजसेवा की भावना का वर्णन किया गया है ।

**अनुवाद :** यह महान व्यक्ति एक विद्वान, कुशल वक्ता, धार्मिक नेता और योग्य पत्रकार था । उसका सबसे बड़ा गुण जनसेवा था । जब भी उसने कहीं दुखी या पीड़ित लोगों को देखा, तो वह तुरंत उनकी सहायता के लिए पहुँच जाता । उसने हर प्रकार से जरूरतमंदों की सहायता की । प्राणियों की सेवा करना उसका स्वाभाविक गुण था ।

#### Quick Tip

अनुवाद करते समय मूल अर्थ को बनाए रखते हुए उसे सरल हिंदी में प्रस्तुत करें ।

(ख) निम्नलिखित संस्कृत श्लोकों में से किसी एक श्लोक का संदर्भ-सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए ।

**संस्कृत श्लोक :**

जलविन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।  
सः हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च ॥

**Solution : संदर्भ :** प्रस्तुत श्लोक में निरंतर प्रयास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान के महत्व को बताया गया है ।

**अनुवाद :** जिस प्रकार पानी की बूंद-बूंद से घड़ा धीरे-धीरे भर जाता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी निरंतर प्रयास करके ज्ञान, धर्म और धन की प्राप्ति करनी चाहिए । निरंतर प्रयास और धैर्य से ही व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति कर सकता है ।

#### Quick Tip

अनुवाद करते समय मूल श्लोक का अर्थ बनाए रखें और उसे सरल हिंदी में व्यक्त करें ।

### अथवा

प्रश्न : निम्नलिखित संस्कृत श्लोकों में से किसी एक श्लोक का संदर्भ-सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए ।

**संस्कृत श्लोक :**

न मे रोचते भद्रं वः उलूकस्यभिषेचनम् ।  
अक्रुद्धस्य मुखं पश्य कथं क्रुद्धो भविष्यति ॥

**Solution : संदर्भ :** प्रस्तुत श्लोक में यह बताया गया है कि अनुचित व्यक्ति को सम्मानित करना समाज के लिए हितकर नहीं होता ।

**अनुवाद :** मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि उल्लू को राजा बनाया जाए । यदि किसी व्यक्ति को स्वाभाविक रूप से क्रोध नहीं आता, तो यह कैसे संभव है कि वह क्रोधित होने पर भयावह रूप धारण कर लेगा ? अर्थात्, जो व्यक्ति योग्य नहीं है, उसे सत्ता देना व्यर्थ है ।

Quick Tip

श्लोक का भावार्थ स्पष्ट करते हुए उसका सरल हिंदी अनुवाद करें ।

9. निम्नलिखित लोकोक्तियों और मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(क) का वर्षा जब कृषि सुखाने

अर्थ : जब समय निकल जाए, तो बाद में सहायता या उपाय करने का कोई लाभ नहीं होता ।

वाक्य प्रयोग : रवि परीक्षा के बाद पढ़ाई करने लगा, यह तो वही बात हो गई "का वर्षा जब कृषि सुखाने" ।

Quick Tip

इस मुहावरे का उपयोग उन स्थितियों में किया जाता है जब अवसर हाथ से निकल चुका हो ।

(ख) अधजल गगरी छलकत जाय

अर्थ : जो व्यक्ति अल्पज्ञानी होता है, वह अधिक दिखावा करता है ।

वाक्य प्रयोग : रमेश को गणित के कुछ ही सूत्र याद हैं, फिर भी वह बड़ा ज्ञानी बनने की कोशिश करता है । "अधजल गगरी छलकत जाय" उस पर बिल्कुल सही बैठता है ।

Quick Tip

इस लोकोक्ति का प्रयोग अधिक दिखावा करने वाले व्यक्तियों के लिए किया जाता है ।

(ग) आग बबूला होना

अर्थ : अत्यधिक क्रोधित होना ।

वाक्य प्रयोग : जब श्याम को पता चला कि उसके मित्र ने उसे धोखा दिया है, तो वह "आग बबूला" हो गया ।

Quick Tip

इस मुहावरे का प्रयोग अत्यधिक गुस्सा व्यक्त करने के लिए किया जाता है ।

(घ) आसमान टूट पड़ना

अर्थ : अचानक बड़ी मुसीबत आ जाना ।

वाक्य प्रयोग : पिता की मृत्यु के बाद अनिल के परिवार पर तो "आसमान टूट पड़ा" ।

Quick Tip

इस मुहावरे का प्रयोग तब किया जाता है जब किसी व्यक्ति पर अचानक कोई बड़ी मुसीबत आ जाए ।

10. अपठित गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गद्यांश :

आज से कई वर्ष पहले गुरुदेव के मन में आया कि शांति निकेतन को छोड़कर कहीं अन्यत्र जाएं । स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं था । शायद इसलिए, या पता नहीं क्यों, वे पाया कि श्री-निकेतन के पुराने मिट्टीले मकान में रहें । शायद बीच में आकर यह निर्णय लिया । वे सबसे ऊपर के तलघर में रहने लगे । उन दिनों ऊपर तक पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ी थी, और वृद्ध और क्षीणकाय रवींद्रनाथ के लिए उस पर चढ़ सकना असंभव था । फिर भी बड़ी कठिनाई से उन्हें वहाँ ले जाया जा सका ।

(क) 'गुरुदेव' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?

**Solution :** गद्यांश में 'गुरुदेव' शब्द का प्रयोग रवींद्रनाथ टैगोर के लिए किया गया है । वे एक महान कवि, लेखक, चित्रकार और शिक्षाविद् थे, जिन्होंने शांति निकेतन की स्थापना की थी ।

Quick Tip

'गुरुदेव' शब्द आमतौर पर रवींद्रनाथ टैगोर के लिए प्रयोग किया जाता है ।

(ख) गुरुदेव ने शांति निकेतन छोड़कर कहीं और रहने का मन क्यों बनाया ?

**Solution :** गुरुदेव ने शांति निकेतन छोड़ने का निर्णय इसलिए लिया क्योंकि उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं था । इसके अलावा, वे श्रीनिकेतन के पुराने मिट्टीले मकान में रहना चाहते थे । यह भी संभव है कि वे किसी नए वातावरण में जाने की इच्छा रखते थे ।

Quick Tip

उत्तर देते समय मूल गद्यांश में दिए गए कारणों का स्पष्ट रूप से उल्लेख करें ।

(ग) उनके समीप तक पहुँचने में क्या कठिनाई थी ?

**Solution :** गद्यांश के अनुसार, गुरुदेव जिस तलघर में रहने लगे थे, वहाँ तक पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ी थी । वृद्ध और कमजोर होने के कारण रवींद्रनाथ टैगोर के लिए इस सीढ़ी पर चढ़ना बहुत कठिन था । फिर भी, उन्हें बड़ी कठिनाई से वहाँ ले जाया गया ।

Quick Tip

उत्तर लिखते समय गद्यांश में दी गई कठिनाइयों को विस्तार से स्पष्ट करें।

11. निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए।

(i) अंबु - अंब

1. आम और बादल
2. माता और पानी
3. माता और पिता
4. इनमें से कोई नहीं

**Solution :** सही उत्तर : (ब) माता और पानी

**स्पष्टीकरण :** अंबु का अर्थ होता है \*\*पानी\*\*, जबकि अंब का अर्थ \*\*माता\*\* होता है।

Quick Tip

शब्द-युग्मों का अर्थ समझने के लिए संस्कृत या हिंदी के मूल अर्थों को ध्यान में रखें।

(ii) भवन - भुवन

1. घर और संसार
2. लोक और परलोक
3. ग्राम और जगत
4. इनमें से कोई नहीं

**Solution :** सही उत्तर : (अ) घर और संसार

**स्पष्टीकरण :** भवन का अर्थ \*\*घर\*\* होता है, जबकि भुवन का अर्थ \*\*संसार\*\* या \*\*दुनिया\*\* होता है।

Quick Tip

भाषा ज्ञान बढ़ाने के लिए शब्दों के मूल और व्युत्पत्तिगत अर्थों को समझना आवश्यक है।

(ख). निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए :

- वारिद
- द्विज

- मित्र

**Solution :** यहाँ द्विज शब्द के दो अर्थ दिए गए हैं :

1. ब्राह्मण – जो दो बार जन्मा हो ।
2. पक्षी – अंडे से उत्पन्न होने वाला जीव ।

**Quick Tip**

‘द्विज’ शब्द संस्कृत से लिया गया है और इसका अर्थ ‘दो बार जन्म लेने वाला’ होता है । इसे ब्राह्मण और पक्षी दोनों के लिए प्रयोग किया जाता है ।

(ग). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए :

(i) जिसका कहीं अंत न हो :

1. (अ) अनेक
2. (ब) अनंत
3. (स) अगण्य
4. (द) अभिन्न

**Correct Answer :** (ब) अनंत

**Solution :** जिसका कहीं अंत न हो, उसे अनंत कहा जाता है । संस्कृत से लिया गया यह शब्द ‘अंत’ (सीमा) के विपरीत अर्थ को व्यक्त करता है ।

**Quick Tip**

‘अनंत’ शब्द का प्रयोग आमतौर पर असीमित, अथाह, और अनंतकालीन वस्तुओं के लिए किया जाता है ।

(ii) कम बोलने वाला :

1. (अ) अतिभाषी
2. (ब) बहुभाषी
3. (स) मितभाषी
4. (द) मृदुभाषी

**Correct Answer :** (स) मितभाषी

**Solution :** जो कम बोलता है, उसे मितभाषी कहा जाता है । ‘मित’ का अर्थ ‘थोड़ा’ होता है, इसलिए यह शब्द कम बोलने वाले व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है ।

Quick Tip

‘मितभाषी’ व्यक्ति कम शब्दों में अपनी बात कहता है और अधिक मौन रखता है ।

(घ). निम्नलिखित में से किसी दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

1. पुनी पराया धन होता है ।
2. आज मेरा बड़ा भाई आ गया ।
3. तुम मेरे को पुस्तक दे दो ।
4. मैं इस लड़के को पढ़ाया हूँ ।

**Solution :** यहाँ सभी वाक्यों को शुद्ध किया गया है :

1. पुनी → पुंजी  
शुद्ध वाक्य : पुंजी पराया धन होता है ।
2. आज मेरा बड़ा भाई आ गया । (यह वाक्य पहले से ही शुद्ध है ।)
3. मेरे को → मुझे  
शुद्ध वाक्य : तुम मुझे पुस्तक दे दो ।
4. पढ़ाया हूँ → पढ़ा रहा हूँ  
शुद्ध वाक्य : मैं इस लड़के को पढ़ा रहा हूँ ।

Quick Tip

हिन्दी व्याकरण में ‘मेरे को’ अशुद्ध प्रयोग है, इसके स्थान पर ‘मुझे’ का प्रयोग किया जाता है ।

12. (क) ‘करुण’ रस अथवा ‘शांत’ रस का लक्षण बताते हुए उसका एक उदाहरण लिखिए ।

**Solution :** करुण रस : करुण रस वह रस है, जो शोक, दुःख या पीड़ा की भावना उत्पन्न करता है । इसका स्थायी भाव शोक होता है ।

उदाहरण :

"सखि वे मुझसे कह कर जाते,  
कहा छोड़ अब परदेश बसे ।"

शांत रस : शांत रस वह रस है, जिसमें वैराग्य, त्याग और मन की शांति की भावना होती है । इसका स्थायी भाव निर्वेद होता है ।

उदाहरण :

"सब कुछ छोड़ चला मैं, अब तेरा ही सहारा ।"

Quick Tip

करुण रस में दुःख प्रधान होता है, जबकि शांत रस में वैराग्य और शांति की प्रधानता होती है।

(ख) 'रोल्हे' अलंकार अथवा 'उत्प्रेक्षा' अलंकार का लक्षण एवं एक उदाहरण लिखिए।

**Solution :** उत्प्रेक्षा अलंकार : जब किसी वस्तु या व्यक्ति में किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति की कल्पना की जाती है, तब उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उदाहरण :

"वह पर्वत ऐसा लगता है, मानो कोई विशाल हाथी खड़ा हो।"

Quick Tip

'उत्प्रेक्षा' अलंकार में किसी वस्तु की कल्पना अन्य किसी वस्तु के रूप में की जाती है, लेकिन 'उपमा' से भिन्न होती है क्योंकि इसमें 'जैसा' शब्द का प्रयोग नहीं होता।

(ग) 'दोहा' छंद अथवा 'चौपाई' छंद का लक्षण एवं एक उदाहरण लिखिए।

**Solution :** दोहा छंद : दोहा छंद में प्रत्येक पंक्ति में 24 मात्राएँ होती हैं, जिसमें दो चरण होते हैं। पहले और तीसरे भाग में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे भाग में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण :

"बड़े बड़ों को चाहिए, छोटों को सम्हाल।  
छोटे बनते बड़े हैं, जब पाती हैं पाल।।"

Quick Tip

'दोहा' छंद तुलसीदास, कबीर, रहीम आदि कवियों द्वारा अधिक प्रयोग किया गया है।

13. छात्रावास की जीवन-शैली विषय पर अपने मित्र को एक पत्र लिखिए।

**Solution :** प्रिय मित्र,

मुझे आशा है कि तुम स्वस्थ और प्रसन्न होगे। मैं इस पत्र के माध्यम से तुम्हें छात्रावास की जीवन-शैली के बारे में बताना चाहता हूँ। छात्रावास जीवन में हमें अनुशासन, आत्मनिर्भरता और मित्रता का महत्व समझ में आता है।

हम यहाँ सुबह जल्दी उठते हैं, समय पर कक्षाएँ लगती हैं और उसके बाद खेल-कूद तथा अन्य गतिविधियाँ होती हैं। छात्रावास में रहकर हमें आत्मनिर्भर बनना सीखना पड़ता है।

मुझे आशा है कि तुम भी कभी छात्रावास जीवन का अनुभव अवश्य करोगे।

तुम्हारा मित्र,

(नाम)

Quick Tip

छात्रावास जीवन से विद्यार्थियों में अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सहयोग की भावना विकसित होती है।

13 (OR) विद्यालय में खेल-कूद की सामग्री की ओर ध्यान दिलाते हुए प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

प्रधानाचार्य महोदय,

विषय : खेल-कूद की सामग्री उपलब्ध कराने हेतु अनुरोध।

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में खेल-कूद की पर्याप्त सामग्री उपलब्ध नहीं है। इससे विद्यार्थियों को खेल-कूद की गतिविधियों में कठिनाई हो रही है।

अतः आपसे अनुरोध है कि विद्यालय में आवश्यक खेल सामग्री उपलब्ध करवाई जाए, जिससे छात्र पूर्ण रूप से खेल-कूद में भाग ले सकें।

सादर,

(नाम)

(कक्षा)

Quick Tip

विद्यालय में खेल-कूद सामग्री विद्यार्थियों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक होती है।

14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर अपनी भाषा-शैली में निबंध लिखिए :

1. भारत में कृषि क्रांति
2. भारतीय लोकतंत्र का भविष्य
3. विज्ञान : वरदान या अभिशाप
4. विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व
5. मेरा प्रिय कवि/लेखक

**Solution :** यहाँ विषय 'विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व' पर निबंध प्रस्तुत किया गया है :

**भूमिका :** विद्यार्थी जीवन व्यक्ति के संपूर्ण जीवन की नींव होती है। यह वह समय होता है जब व्यक्ति अपने भविष्य का निर्माण करता है। इस दौरान अनुशासन का पालन करना अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि अनुशासन ही सफलता की कुंजी है।

**अनुशासन का अर्थ :** अनुशासन का अर्थ है अपने कार्यों को एक निर्धारित नियम और अनुशासित तरीके से करना। यह आत्मनियंत्रण और समय-प्रबंधन की कला है जो व्यक्ति को जीवन में सफलता दिलाती है।

**विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व :**

1. **समय का सदुपयोग :** अनुशासन के माध्यम से विद्यार्थी अपने समय का सही उपयोग करना सीखता है ।
2. **शिक्षा में सफलता :** अनुशासन के बिना अध्ययन में निरंतरता बनाए रखना कठिन होता है ।
3. **चरित्र निर्माण :** अनुशासित व्यक्ति का व्यक्तित्व सुदृढ़ होता है और वह समाज में सम्मान प्राप्त करता है ।
4. **आत्मनिर्भरता :** अनुशासन व्यक्ति को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाता है ।
5. **लक्ष्य प्राप्ति :** अनुशासन के बिना कोई भी अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता ।

**अनुशासन के अभाव में हानि :** जो विद्यार्थी अनुशासनहीन होते हैं, वे अपने अध्ययन पर ध्यान नहीं देते और जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हैं । अनुशासन की कमी से आलस्य, असफलता और अव्यवस्था का जन्म होता है ।

**अनुशासन कैसे अपनाएँ ?**

- नियमित दिनचर्या का पालन करें ।
- पढ़ाई और खेल-कूद में संतुलन बनाए रखें ।
- बड़ों का आदर करें और अनुशासित जीवन व्यतीत करें ।

**निष्कर्ष :** अनुशासन ही विद्यार्थी जीवन को सफल और सार्थक बनाता है । जो विद्यार्थी अनुशासन का पालन करते हैं, वे जीवन में महान कार्य कर सकते हैं । अनुशासन केवल विद्यार्थी जीवन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह पूरे जीवन में सफलता की कुंजी होता है ।

#### Quick Tip

अनुशासन को अपनाकर विद्यार्थी न केवल एक अच्छा नागरिक बन सकता है, बल्कि अपने भविष्य को भी उज्ज्वल बना सकता है ।